सरदारशहर के दो विद्यालयों को जय तुलसी विद्या पुरस्कार

विद्यालयों में मिले नैतिकता के संस्कार : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 24 अक्टूबर, 2010

चौथमल कन्हैयालाल सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, सूरत के आर्थिक सौजन्य से जैन विश्व भारती के द्वारा प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला जय तुलसी विद्या पुरस्कार इस वर्ष सरदारशहर के दूगड़ उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं श्री राजेन्द्र विद्यालय को संयुक्त रूप से प्रदान किया गया। यह पुरस्कार जीवन विज्ञान एवं मूल्यपरक शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले विद्यालयों को दिया जाता है। आज तेरापंथ भवन में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित पुरस्कार समर्पण समारोह में जैन विश्व भारती के आयोजकत्व एवं चौथमल कन्हैयालाल सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट के प्रायोजक्तव में दुगड़ विद्यालय के झब्बरमल, कनकमल दुगड़ एवं श्री राजेन्द्र विद्यालय के प्रबंध समिति के अध्यक्ष रणजीत डागा एवं विद्यालय के संस्थापक रेंवतमल भाटी, पृथ्वीसिंह को प्रतिक चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया एवं ट्रस्ट की ओर से दोनों विद्यालयों के प्रतिनिधियों को एक-एक लाख रुपये का चैक समर्पित किया। यह पुरस्कार 2004 से इस ट्रस्ट के सहयोग से जैन विश्व भारती के द्वारा प्रदान किया जाता है। पुरस्कार राशि को इस वर्ष से दो लाख कर दी गई है। अब प्रतिवर्ष दो विद्यालयों का इस पुरस्कार के लिए चयन किया जाएगा।

पुरस्कार समर्पण समारोह को संबोधित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा कि पुरस्कार से प्रोत्साहित किया जाता है। पुरस्कार प्राप्त करने वाली दोनों स्कूलों को नैतिकता पर विशेष बल देना है। विद्यालयों में नैतिकता के संस्कार दिये जाने बहुत जरूरी है। ज्ञातव्य है कि आचार्य महाश्रमण ने बचपने में श्री राजेन्द्र विद्यालय से ही शिक्षा प्राप्त की थी।

कार्यक्रम में ट्रस्ट की ओर से श्रीमती सोनिया ने अपने विचार रखे। जैन विश्व भारती के सहमंत्री विजयसिंह चौरड़िया ने जैन विश्व भारती का परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा कि सरदारशहर के दोनों विद्यालयों को जय तुलसी विद्या पुरस्कार देते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। दुगड़ विद्यालय की ओर से स्वीकृति भाषण देते हुए कनकमल दुगड़ ने विद्यालय के द्वारा उल्लेखनीय कार्यों की जानकारी प्रस्तुत की। राजेन्द्र विद्यालय की ओर से रेंवतमल ने अपने विचार रखे। इससे पूर्व गुंजन सेठिया ने आचार्य महाश्रमण को ट्रस्ट की संक्षिप्त जानकारी का फोल्डर भेंट किया। इस मौके पर मुनि कीर्तिकुमार एवं मुनि विनीत कुमार ने अपने द्वारा सज्ञादित एवं संकल्पित पुस्तक 'भैक्षव शासन' की प्रथम कृति विमोचन हेतु आचार्य महाश्रमण को समर्पित की। इस पुस्तक में तेरापंथ धर्मसंध के 250 वर्षों का संक्षिप्त इतिहास समाहित किया गया है। इतिहास सरक्षण में

तेरापंथ का विलक्षण योगदान है। जैन विश्व भारती लाडनूं द्वारा प्रकाशित प्रस्तुत पुस्तक में समग्र साधु–साध्वी एवं समण श्रेणी दीक्षा दर्पण तेरापंथ के नव उन्मेष वर्ष अग्रगण्य, पारिवारिक दीक्षा विवरण सहित अनेक तथ्यों को आंकड़ों में प्रस्तुत किया गया है।

इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ चिकित्सा संस्थान वागदरी का मासिक प्रकाशन 'वनवासी अंचल' का महाप्रज्ञ विशेषांक का विमोचन संस्थान के अध्यक्ष विमल चौरड़िया, उपाध्यक्ष सलील लोढ़ा एवं सचिव मूलचन्द लोढ़ा ने आचार्य महाश्रमण को समर्पित किया तथा संस्थान के बारे में सहसचिव वरदीचन्दराव ने विचार व्यक्त किये।

नैतिक शक्ति सम्पन्न राष्ट्र के आधार हो सकते हैं अणुव्रती शिक्षक : आचार्य महाश्रमण

अणुव्रत आदमी को पाप से बचाने वाला आन्दोलन है, अगर शिक्षक के जीवन में अणुव्रत आ जाए तो देश नैतिकता का विकास हो सकता है। कोई भी राष्ट्र नैतिक बल के अभाव में अनेक संकटों में फंस जाता है। देश आज व्यसनमुक्ति अभियान बहुत जरूरी है। अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी की जनम शताब्दी वर्ष सामने है। विद्यार्थियों को नशामुक्त बनाने के लिए योजना बनानी चाहिए। उपयुक्त विचार आज तेरापंथ भवन में आयोजित राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के 18वें तीन दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन के शुभारंभ अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने देश के विभिन्न नौ राज्यों से पधारे 150 शिक्षकों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए व्यक्त किये। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर देश के 1 करोड़ विद्यार्थियों को व्यसनमुक्त बनाने की कार्य दृष्टि प्रस्तुत की जिस संभागी शिक्षकों ने सहर्ष पूरा करने का संकल्प व्यक्त किया। स्वागत भाषण संगठन के मंत्री धर्मचन्द जैन अन्जाना ने किया। जबकि भावी दृष्टि पर संस्था के विशिष्ट मार्ग दर्शक डॉ. हीरालाल श्रीमाली ने दिशा बोध किया।

इस अवसर पर मुनि सुखलाल ने अपने विचार व्यक्त किये। प्रो. साधुशरणसिंह सुमन, धर्मचन्द जैन, डॉ. सुधा, डॉ. फारुख, नवल बाबू, बी.एन. पाण्डे ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संयोजन भीखमचन्द नखत ने किया।